सम्पादक की कलम से

नि:शुल्क रोजगार मूलक शिक्षा से समता

प्रत्येक मानव को शिक्षित होने का अधिकार है और सभी उपदेशक शिक्षित होने का आव्हान भी करते रहते है आजादी के पूर्व तक तो यह माना जाता रहा कि शिक्षा एक विशिष्ट वर्ण तक ही सीमित है इससे पूर्व सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतिराव फुले ज्ञान ज्योति प्रथम शिक्षिका सावित्रीफुले के काल ;1800.1900द्ध के शतक में इन महापुरूषों ने शिक्षा का महत्व समझा और नि:शुल्क रोजगार मूलक शिक्षा सभी वर्णों को समता से मिले इसका अभियान छेड़ा, अनेक झंझावातो का सामना करते हुए फुले न नारी शिक्षा का आगाज कियाा पत्नि सावित्री को शिक्षित किया मित्रों के सहयोग से प्रथमशाला भिड़े के वाड़ा पूना में खोली और सभी वर्णों के बालक–बालिकाओं के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये।

संविधान रचियता बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर ने जोतीराव फुले को अपना गुरू मानकर उनके आदर्शों को ध्यान में रखकर भारत के सभी वर्णों के महिला–पुरूषों को शिक्षा पाने का संवैधानिक अधिकार प्रदान कर दिया। संविधान के अनुसार समता मूलक शिक्षा मिल सके इसलिए मलूभूत अधिकार में शिक्षा को शामिल किया ताकि सरकार चलाने वाले अपने नागरिको को शत्–प्रतिशत् शिक्षित करे। अधिकार भले ही मिल गया । किन्तु क्रियान्वयन करने से सभी सरकारे असफल रही शिक्षा का अधिकार कानून तक बना दिया, किन्तु क्रियान्वयन की समुचित व्यवस्था नहीं की । और देश की आजादी के 71 वर्ष एवं 68 वर्ष का गणतंत्र होने के बाद भी समता मूलक सभी को शिक्षित होने का अवसर ही पैदा नहीं होने दिया ।

सरकार बनती गई सरकारी बजट पास होते गये शिक्षा के लिए हो हल्ला कानून नियम सब बनाये शिक्षा नीतियाँ बनती रहीं । शिक्षा के मद में समुचित बजट का प्रावधान ही नहीं किया। हमारी आबादी 33 करोड़ से 133 करोड़ हो गई किन्तु शहरी क्षेत्र में 70% एवं ग्रामिण क्षेत्र की 40: से अधिक अर्ध शिक्षित या शिक्षित आबादी आगे ही नहीं बढ़ पा रही है तमाम गणना हो रही है किन्तु शिक्षा को प्रायः किसी भी सरकार ने अपना लक्ष्य ही नहीं बनाया शिक्षा नीतिकारों ने भी शायद यहीं चिन्तन किया होगा कि यदि देश के सभी नागरिक सुशिक्षित हो जायेंगे तो श्रमिक कहाँ से लाएंगें, निमार्ण उम्पादन का कार्य कौन करेगा इसलिए शिक्षा का हो हल्ला मचाया जाय, किन्तु सर्वशिक्षा वास्तविक रूप से नहीं मिल सके इसका सीमित बजट ही रखा जाय ताकि अर्ध शिक्षित –अशिक्षित नागरिक मजदूरी करके निमार्ण –उम्पादन के कार्यों को अन्जाम मजबूरी में देते रहे। इसी का परिणाम है कि हमारे देश के अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षित ही नहीं है, विद्यालयों की सर्वाधिक कमी है, फिर जितने भी विद्यालय है कि उनमें समुचित संसाधन ही नहीं यहाँ तक की बच्चों के बैठाने के लिए टाट पट्टियां भी पूरी तरह से नहीं मिला पा रही है । सरकारी विद्यालय तो कम बजट के कारण मजबूरी में ही संचालित हो रहे है।

फिर निजि शिक्षण संस्थाओं को समझने का प्रयास करें हमारे देश में शिक्षा तो उद्योग घरानों का काम बनता जा रहा है, जिन बच्चों के परिवार की आर्थिक हालात अच्छी है उन्हें ऊँचे से ऊँचे स्कूल में दाखिला मोटी धनराशि खर्च कर दिलाया जा रहा है फिर मध्यम श्रेणी के लोग न तो सरकारी स्कूल में बच्चों को दाखिला दिलाते और पूरी तरह से निजि विद्यालयों में दाखिला दिला पाते है, क्योंकि उनकी सीमित आय से ही बच्चों की शिक्षा व्यवस्था पर खर्च कर पाते है । फिर रही बात धनहीन परिवारों की तो उनके बच्चे ही निजि विद्यालय के द्वार ही नहीं देख पा रहे है और सरकारी विद्यालयों में दूध–दलिया (भोजन), युनिफार्म, पाठ्य सामग्री, वजीफा आदि जब तक मिलता है तब तक शिक्षा की औपचारिका ही निभा सकते है या अर्धशिक्षित रहकर मेहनत मजदूरी के कामों में लग जाते है व परिवार चलता रहता है । याने संविधान में प्रदत्त शिक्षा के अधिकारों को दिलाते हेतु सरकारे अपने बजट को आवश्यकता के अनुरूप जब तक नहीं बनायेगी देश में शिक्षा का ढर्रा ऐसे ही चलता रहेगा।

वास्तविक रूप से प्रत्येक नागरिक को शिक्षित कराने का सरकार का दायित्व है, माता–पिता सभी अपने बच्चों को ऊँचे से ऊँची शिक्षा दिलाना चाहते और समता मूलक समाज का जवाबदार नागरिक बनाना चाहते है, किन्तु क्या करें? यह चिन्तन शिक्षा के नीति कारों को करना चाहिए सरकारों को शिक्षा का बजट बढ़ाना चाहिए । प्रत्येक नागरिक को सुमुचित मिल सके इसकी व्यवस्था करना ही चाहिये।

हाँ केरल सरकार एवं वर्तमान दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने शिक्षा का बजट दो आकड़ों का बनाया इस पर कार्य हो रहा है इसके कारण इन प्रदेशों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा का माहोल बन रहा है। इन्ही सरकारों का उदाहरण लेकर भारत सरकार भी अपनी शिक्षा नीतियाँ बनाकर क्रियान्वित करा सकती है। इससे प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीयता समझ विकसित कर सके।

जहाँ तक समता मूलक व्यवस्था का प्रश्न है इसे गौण करे समरसता का एक नया फार्मूला की चर्चा हो रही है जो नागरिकों को समता के अधिकार से वंचित रखने की कुटिल चाल है।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान ''शिक्षादान की अभिनव योजना'' पर विगत 2011 से कार्य कर रही है, इसकी योजना है कि निशुल्क रोजगार मूल शिक्षा के द्वार समता से प्रारम्भ किये जाय।

सावित्रीबाई फुले की 3 जनवरी जयंति एवं 68 वें गणतंत्र दिवस पर अपने–अपने बच्चों को समुचित शिक्षित करने का संकल्प लेकर राष्ट्र उत्थान में योगदानी बने।

गणतंत्र दिवस अमर रहे ।

– रामनारायण चौहान

ज्ञानज्योति सावित्रीबाई फुले की 188वीं जंयति

जीवन के कुछ प्रसंग

महात्मा ज्योतिबा फुले की तरह ही सावित्रीबाई के व्यक्तित्व में भी अलौकिक गुण समाहित थे । उनके जीवन के कुछ प्रसंगों के माध्यम से वे अलौकिक गुण स्पष्ट दिखाई देते हैं। 1848 में फुले दंपत्ति ने सामाजिक कार्य प्रारम्भ किए, तब ज्योतिबा की उम्र थी 21 साल और सावित्रीबाई ने अनेकों समस्याओं एवं बाधाओं का मुकाबला करते हुए अपने पति के आदर्श पथ पर अग्रसर होना जारी रखा। उनके समकालीन व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सावित्रीबाई केजीवन के कुछ महत्तवपूर्ण प्रसंग निम्नांकित हैं–

भिड़े की हवेली में ज्योतिबा फुले ने लड़कियों के लिए स्कूल खोला वहां पढ़ाने के लिए कोई अध्यापक नहीं मिलता था। सावित्रीबाई खुद वहां पढ़ाने के लिए जाति थीं । जिसका तत्कालिन ब्राहम्णों तथा धर्मशास्त्रियों ने बहुत विरोध किया। वे उनपर गोबर एवं पत्थर फेंकते थे। उस समय सावित्रीबाई संयम के साथ कहती, ''मेरे भाइयों, मैं आप की छोटी–छोटी बहनो को पढ़ाने का काम करती हूँ। मुझे प्रोत्साहित करने के लिए आप मुझ पर ये फूल मानती हूँ । इससे तो मुझे आपकी बहनों को पढ़ाने का अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलता है। भगवान आपको सुखी रखे।'' ऐसा कहकर सावित्रीबाई घर लौटती । उस समय उनके साथ एक पट्टेवाला और बलवंतराव सखाारामजी कोल्हे दोंनों रहते थे । सावित्रीबाई की सुरक्षा के लिए तात्यासाहब ने उसकी नियुक्ति की थी। एक दिन एक अपाहिज भिक्षुक सावित्रीबाई के दरवाजे पर आया। सावित्रीबाई ने उसे आटा,दाल, चावल एवं गुड़ आदि दिया। लेकिन उस भिक्षुक की झोली फटी हुई जिससेवह समान नीचे गिर रहा था । इत्तफाक से वहाँ ज्योतिबा आ गये। उन्होनें भिक्षुक की हालत देखकर अपना उपरना उसे दे दिया। भिक्षुक कृतज्ञयता से कहने लगा, ''बापकी पत्नी ममता से परिपूर्ण है, उसी ने यह भीख इस गरीब बाबा, भी उसी माउस की तरह परोपकारी दिखाई देते हो'' यह सुनकर ज्यातिबा थोड़े हंसे और भिक्षुक के प्रति आभार व्यक्त किया ।

सावित्रीबाई से शादी हो जाने के पश्चात संतान प्राप्ति न होने पर कुछ लोगों ने उनके सामने दूसरी शादी का प्रस्ताव रखा । इससे ज्योतिबा किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये । वे रात को सोचते हुए मुठा नदी की ओर चल पड़े उन्हें अचानक नदी के किनारे एक स्त्री दिखाई दी। उसका इरादा भांपकर वह तुरंत उसके पास पंहुचे । उससे बातचीत करने पर उन्हें पता चला कि वह विधवा ब्राहमणी है और उसकी कोख में छह महीने का गर्भ है। ज्योतिबा ने उसे साहस देते हुए कहा, ''बेटी तुम आत्महत्या मत करो। मैं तुम्हारा धर्मपिता हूँ। मेरी कोई संतान नहीं है। मैं तुम्हें अपनी कन्या समझकर तुम्हारी और कोख से जन्म लेने वाला शिशु की परवरिश करूंगा। मेरी पत्नी भी तुम्हें देखकर प्रसन्न होगी।'' ज्योतिबा उस अभागी स्त्री को अपने घर आए। सावित्रीबाई को सब किस्सा कह सुनाया। उस अभागिनी को अपने गले लगाकर सावित्रीबाई ने मां की ममता दी । उसकी प्रसूति अपने घर में की। बच्चे का नाम यशवंत रखा। काशीबाई ने गोद नामक विधवा ब्रहामणी के इसी पुत्र को आगे चलकर सावित्रीबाई ने गोद लेकर उसकी परवरिश की । सावित्रीबाई के पास यदि ममता न होती न काशीबाई जीवित रहती न यशवंत जन्म लेता।

यह प्रसंग सावित्रीबाई के बचपन का है। बचपन में एक बार मां की अनुमति लेकर सावित्रीबाई बाजार गई। बाजार में उसने जलेबी और पकौड़ी की पुड़िया हाथ में लेकर वापस लौट रही थी। रास्ते में उसकी भेंट एक ईसाई मिशनरी से हुई जो अन्य साथियों के साथ ईश वंदना कर रहे थे । सावित्रीबाई वह सुनती रही, साथ ही साथ जलेबी और पकौड़ी भी खाती जा रही थी। मिश्नरी ने सावित्री से कहा –बेटी अच्छे लोग खाद्य पदार्थ रास्ते में नहीं, घर में बैठकर खते हैं। तुम भी वैसा ही करोगी तो इच्छा होगा।'' सावित्रीबाई को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने तुरंत वह पुडिया फेंक दी। उस पर मिशनरी बहुत खुश हुआ और उन्होंने एक बिस्कुट का पैकेट और एक पुस्तक सावित्रीबाई को देकर कहा, ''यह पुस्तक तुम अपने पास रखो । तुम पढ़ तो नहीं सकती लेकिन चित्र देखकर भी तुम्हें संतोष मिलेगा।''

सावित्रीबाई घर लौटी तो यह बात गांव में फैल गई। इसाई के हाथ का बिस्कुट और पुस्तक लेने से सावित्रीबाई कलुशित हो गई। सावित्रीबाई ने उधर ध्यान तक नहीं दिया। उसने वह पुस्तक संभालकर रख ली । बाद में ज्योतिबा फुले से शादी होने पर ससुराल जाते समय सावित्रीबाई अन्य चीजों के साथ वह पुस्तक भी अपने साथ ले गई। सगुणाबाई और सावित्रीबाई को ज्योतिबा ने पढ़ाया साक्षर बनाया। तब सावित्रीबाई ने वह पुस्तक अपने बक्से से निकालकर पूरी हकीकत ज्योतिबा के सामने कही। ज्योतिबा हंसे और उन्होने उसे वह पुस्तक पढ़ने को कहा । वह प्रभु यीशु का आसान भाषा में सचित्र जीवन चरित्र था।

एक बार एक छात्र का अभिभावक गाली–गलौज करते हुए स्कूल में घुसने लगा। वह उस बच्चे को पीटना चाहता था, जिसने उसके लड़के को मारा था। सावित्रीबाई ने पढ़ाना बंद करके उसे समझाया–''बच्चे आज झगड़ेंगे और कल फिर दोस्त बन जाएंगे। बड़ों को ऐसे झगड़ों से उत्तेजित नहीं होना चाहिए । आज आप उस बच्चे को मारेगा। छोटों का झगड़ा बड़ों में फैलेगा तो अनर्थ होगा।'' इतना समझाने पर भी जब अभिभावक न माना तो सावित्री ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि आप यहां से वापिस नहीं गये तो मुझे दूसरा रास्ता अपनाना पड़ेगा। सावित्रीबाई का यह रूख देखकर वह सज्जन भी घबरा गए। उन्हें अपनी गलती को अहसास हुआ। उन्होंने सावित्री से माफी मांगी।

अध्यापन कार्य के दौरान एक बार स्कूल जाते समय एक कट्टर सनातनी सावित्रीबाई के सामने आ खड़ा हुआ। उसने उन्हें धमकी दी कि ''यदि तुम लड़कियों और महार–मांगो को पढ़ना बंद नहीं करोगी तो तुम्हारी इज्जत नहीं बचेगी।'' आम रास्ते में इस वारदात को कई व्यक्तियों ने देखा परंतु वह उस बदमाश का विरोध न कर सकें। परन्तु सावित्रीबाई को उस बदमाश का यह साहस देखकर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने उसे दो–तीन थप्पड़ जड़ दिए। इस आकस्मिक घटना से वह बदमाश बौखलाकर वहां से भाग निकला। इसके बाद सावित्रीबाई को तंग करने की हिम्मत किसी ने नहीं की।

शादी के बाद बहुत दिनों तक संतान प्राप्ति न होने पर रिश्तेदारों के साथ ही ज्योतिबा फुले के पिता गोविंदराव ने भी ज्योतिबा के सामने दूसरी शादी का प्रस्ताव रखा । उस समय सावित्रीबाई की सत्यपरीक्षा का समय था। सावित्री ने सानंद ज्योतिबा को दूसरी शादी करने की इजाजत दे दी। लेकिन ज्योतिबा को यह मुजूर नहीं था। उन्होंने कहा कि यदि पुरूष को दूसरी शादी करने अधिकार है तो स्त्री को क्यों नहीं? उनके इस प्रश्न पर सभी चुप रह गए।

संकलन
गंगाराम गेहलोत
उपाध्यक्ष महात्मा फुले
सामाजिक शिक्षण
संस्थान केम्पस गुजरात

सामाजिक चिंतन (भाग-19)

एकता एवं उत्थान के लिए लक्ष्य बनाओ

प्रायः समाज की अगवाई करने वालों की अभिलाषा यह रहती है कि समाज सेवा करके समाज में एकता स्थापित कर समाज की ताकत का एहसास कराकर सामाजिक एवं राजनैतिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जाय, और समाज उत्थान करके सभी समाजनों को सक्षम बनाकर औरों की भांति सामाजिक शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनैतिक शिखर तक पहुँचाया जाय । बस इसी उधेड़ धुन में घर–बार–छोड़कर दर–दर की ठोकर खाते हुए तन–मन–धन से समाज सेवा के क्षेत्र में अनेकानेक व्यक्तियों ने प्रयास किये। किन्तु वर्तमान में इन सबके अथक प्रयासों के बाद भी किसी मंजिल को नहीं पा सके है। पीढ़ीयाँ गुजराती जा रही है, फिर भी सफलता क्यों नहीं मिल पा रही है? यह चिंतन का गम्भीर विषय है।

अब आइये विचारा करते है कुछ समाज की जातियों के जागरूक लोगों ने समाज की एकता एवं उत्थान का प्रयास किया, अपना लक्ष्य बनाया कि हम अपने समाज की गरीबी दूर करेंगे। कोई भी समाजजन भीख नहीं मांगेगा। हमारा मुखिया जिसे भी वोट देने का आव्हान करेगा हम उसे ही वोट करेंगे। जगह–जगह धर्मशाला मंदिर गिरजाघर, मस्जिद, गुरूद्वारा बनायेंगे । समाज की अनेक उपजातियों का भेद मिटाकर अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनायेंगे। अपने मुखिया का सम्मान कर उनके आव्हान को पूरा करने हेतु मन–वचन–कर्म से पालन करेंगे। अपनी आमदानी का एक भाग–समाज उत्थान हेतु अपनी संस्था को बिना स्वार्थ के नियमित रूप से देंगे। समाज के कोष से समाज उत्थान हेतु आने वाली पीढ़ीयों के लिए कोई स्थाई योजना बनाकर उनके कल्याण का कार्य करेंगें। मुखिया के आव्हान पर अपने सभी काम छोड़कर समाज की भाक्ति का एहसास कराने हेतु आयोजनों में परिवार सहित भाग लेंगे। परस्पर सहकारी समिति बनाकर समाज के जरूरतमन्द व्यक्तियों को आगे बढ़ाने हेतु आर्थिक सहयोग करेंगे। मुखिया पर विश्वास करेंगे। फिजुल खर्ची नहीं करेगें। कुरीतियाँ छोड़कर आधुनिक जीवन को मजबूत बनाने हेतु व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्रयासरत रहेंगे। इसी प्रकार और भी प्रगतिशील लक्ष्य बनाकर जो आगे बढ़ गये प्रायः वे सफल होते गये। इस प्रकार के लक्ष्यों को पाने वाले समाजों में 1.बोहरा समाज 2. सिख समाज 3. जैन समाज 4. पारसी समाज 5. क्रिश्चियन (ईसाई) समाज 6. कुर्मी पाटीदार समाज 7. सिन्धी समाज जैसे समाजों का उदाहरण लेकर जो समाज को आगे बढ़ाने हेतु समाज सेवी आगे निर्स्वाथ भाव से समाज सेवा कर रहे है उनका समाज आगे बढ़ाने हेतु समाज सेवी, आगे निस्वार्थ भाव से समाज सेवा कर रहे है उनका समाज आगे बढ़ता जा रहा है, इसी का परिणाम है कि उनके समाज–जाति का व्यक्ति चहुँदिशा में उन्नति करता जा रहा है, कई समाज जातियाँ ऐसी भी है, जिन्होनें समाज को शिक्षित करने हेतु भी कई प्रकार के सोपान प्रारम्भ कर दिये है। इनके परिवार सुख समृद्धि को और अग्रसर है एवं अपना उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है।

अब आइए चिंतन करते है कि हमारा समाज अभी तक आगे क्यों नहीं बढ़ पा है? प्रमुख कारण तो यह है कि हमारा समाज 1. स्वाभीमानी है 2. शिक्षित नहीं है 3. आर्थिक रूप से कमजोर है

4.हम एक दुसरे की आलोचना/बुराई करने में सबसे आगे है 5.हमारे उपर एक कहावत चरितार्थ होती है कि माली (सैनी–कुशवाहा–शाक्य–मौर्य) मुले –छिद्दे भले यानि हम अलग–अलग (दूर–दूर) ही अच्छे है 6.आगे बढ़ने वालों की टाँग खींचने में आनंद की अनुभूति करते है 7. जो भी सामाजिक संगठन बनता है उसको तोड़फोड़ कर पदों को लेकर झगड़ने में हम माहिर है 8. हम अनेक भाखाओं में बँटे हुए है 9. एक ही भाखा से दुसरी वालो को पसन्द ही नहीं करते, इस कारण आपस में जुड़ने से दूर ही बने रहते है 10. हमारी कोई राष्ट्रीय, प्रांतीय, जिला स्थानीय स्तर की एकता स्थापित करने वाली संस्था ही नहीं है 11. जो संस्था–संगठन बन गये है वे सबको साथ लेकर चलाने हेतु इनके पदाधिकारी गण बढ़ी समझ ही पैदा नहीं कर पा रहे है 12. हमारा प्रशिक्षण, कोचिंग केन्द्र भी इने–गिने ही है और वे भी समाज का पूरा सहयोग नहीं मिलने के कारण ठीक से संचालित नहीं हो पा रहे है। 13. हमारी कोई परस्पर सहकारी समिति नहीं है, जहाँ अपना आर्थिक योगदान करने वालो को भी कहाँ योगदान करें जानकारी ही नहीं है 14. हमारा कोई प्रादेशिक राष्ट्रीय मीडिया ही नहीं है 15. हम अपने बच्चों के रिश्ते किस प्रकार करे इसके लिये इनी–गिनी वैवाहिकी–पत्र–पत्रिकाऐं ही प्रकाशित हो रही है और इनको भी हम सदस्यता और विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग ही नहीं कर पाते 16. हम धर्म– कर्मकाण्ड अंधविश्वास अज्ञानता के भ्रमर जाल में उलझे हुए है, वैज्ञानिक आधारों पर जो खरा उतरे उसे मानने को तैयार ही नहीं होते 17. हमारे पुरूषों महात्मा बुद्ध, चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक संत सावता माली, संत लिखमीदास सरदार उधमसिंह महात्मा जोतीराव फुले, सावित्री बाई फुले, मेघाजी लोखण्डे, रामजी महाजन जैसे महामनाओं के आदर्शों को समझना उनको अपनाना भी नहीं चाहते 18. अपने महापुरूषों को प्रायः फोटो आकारों भाषण बाजी में हो देखना समझना चाहते है इनकी जंयतियाँ पुण्यतीथियाँ मनाकर फर्ज पूरा करने में ही इति श्रीमान लेते है। जबकि इनकी जीवनी एवं आदर्शों को अपना कर अच्छे मानव बन सकते है, इसी प्रकार अनेक तथ्य हम पर लागू होते है।

आइये समाज की एकता उत्थान हेतु लक्ष्य बनाकर समाज सेवा का नया अहसास आज

से ही प्रारम्भ करे अपनी कमजोरीयों को दूर करे, महिलाओं को आगे बढ़ाये और प्रजातंत्र का पूरा–पूरा आनंद परिवार सहित लेने हेतु सामूहिक पहल करने हेतु तत्पर रहे। आगे बढ़ना है तो पढ़ना ही होगा।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/-/ शिक्षादान की राशि रू. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम ____
2. पिता/पति का नाम ____
3. जन्म तिथि ____ 4. ब्लड ग्रुप ____

Passport Size Photo

5. शिक्षा ____
6. व्यवसाय ____
7. वोटर कार्ड नं. ____ 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं. ____
9. आयकर पेन कार्ड नं. ____ 10. आधार कार्ड नं. ____
11. स्थायी पता ____ पिन कोड ____
12. पत्र व्यवहार का पता ____ पिन कोड ____
13. फोन/फैक्स नं. ____ 14. मोबाईल नं. ____
15. ई-मेल ____

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री.. ने रसीद नं. .... दिनांक .... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

आपसी बात

शिक्षा ईशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - दिसम्बर 2018 से जनवरी 2019

● तेलांगाना – सुकुमार पेटकुले, (आदिलाबाद), ओमप्रकाश देवड़ा (हैदराबाद) ।

● दिल्ली– श्रीपाल सैनी, चौ. इन्द्रराज सिंह सैनी, जी.एल. सैनी, रमेश कुमार सैनी, शिवराज सैनी, वेदप्रकाश सैनी, सुमन कुमार सैनी, डॉ. नरेन्द्र सैनी, जे.पी. सैनी, ।

● उत्तरप्रदेश– राधेश्याम मालाकार (नोयडा), एस. बी. सैनी (कानपूर), रमेश सैनी रविन्द्र कुमार सैनी(कन्नौज), चंदनलाल श्रीमाली(इलाहबाद) ।

● मध्यप्रदेश– गजानंद भाटी, जी.पी.माली डॉ. प्रेमलता सैनी, डॉ.पी.एन. अम्बाड़कर (भोपाल), जगदीश सैनी (जबलपुर), रामकिशोर कावरे(बालाघाट), सुरेश सुमन (ब्यावरा) मंगला अम्बाड़कर (सौसंर), तुलसीराम सुमन, भूपेन्द्र सुमन, मुकेश सुमन (श्योपुर), यादवलाल चौहान(इन्दौर), विनोद मकवाना (बड़नगर)

● महाराष्ट्र– वनिता लोंडे, राजेन्द्र सैनी मनीषा मान्दोड, प्रकाश ढोकने (मुम्बई), शिवदास महाजन (पुणे), डी.के. माली (ठाणे), ज्ञानेश्वर गौरे डॉ. दिलीप घावड़े (यवतमाल), डॉ. प्रताप महाजन (जलगांव), डॉ. के. एस. यावलकर (नागपूर), महेश गणगणे, सुभाष सातव (अकोला) ।

● बिहार। जर्नादन मालाकार, मदनमोहन भक्त (भोजपुर–आरा), बी.एन. सैनी (डेअरी–आन–सान) संजय मालाकार (पटना)।

● उत्तराखण्ड– महावीर सिंह सैनी, (देहरादून),रामसिंह सैनी (पूर्व मंत्री) रूढ़की ।

● राजस्थान – बुधसिंह सैनी, गोपाल सैनी, पूनमचन्द कच्छावा, मांगीलाल पंवार, सुभाष सैनी, छुट्टनलाल सैनी, नीलूजी पापटवाल, हजारीलाल बाबूजी शंकरलाल सैनी (जयपुर), ताराचन्द गेहलोत (पुष्कर) सेवाराम दग्दि (परबतसर), सवरलाल सैनी (सीकर) सैनी भवानीमल अजमेरा ओमजी रामअवतार सिंगोदिया बनवारीलाल नेमीचन्द अनुभव चन्देल, भवानीशंकर माली, विजेन्द्र सैनी, बल्देव सैनी, ओ.पी. सैनी, ;त्धेद्ध औंकारमल माली, सुभाष सैनी, विरदीचन्द सिंगोदिया (जयपुर), मोतीबा फुले (फालना), नरेश सैनी,

● हरियाणा– चन्द्रपाल सैनी टी.आर. सैनी (गुडगाँव), राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा)

● पंजाब– हरभजनसिंह सैनी (रोपड़)

● तेंलगाना– सुकुमार पेटकुले (आदिलाबाद) ।

● कर्नाटक– एन. एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर) ।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल (बालोद), राजेन्द्र नायक (महासमुन्द),।

● उडीसा– अनुदराम पटेल (नुवापाड़ा) ।

● हिमाचल प्रदेश– पी. डी. सैनी (कांगड़ा) ।

● तमिलनाडू– व्ही. एम. पल्लव मोहन वर्मा (चैन्नई) ।

APPENDIX 'B'

The Tenets of the 'Sataya- Samaj'

The First meeting of the Satya Shodhak Samajists was held in Poona on 17th April 1911 under the Chairmanship of Shri Ramayya Venkayya Ayyawaru. The following important decisions were taken at the said meeting.

1. This 'Samaj' should be designated as "Satay Samaj".

2. (A) All human beings Are the Children of one God. He is the father of us all.

(B) Just as no intermediary or broker is needed to cntreat one's mother or to please one's father, So no intermediary or broker is needed for a devotee to know God in His true form and to propitiate him (such as a priest, or a religious preceptor or a guru.)

(C) He who accept this tenet is Satya Samajist.

3. Every Satya Samajists Must take the following pledge:- " All Human begin are the children of one God .I shall always Conduct myself, keeping in mind the Common frater nal relations of us all.

While worshipping God or offering devout prayers to Him or while performing any religious tites, I Shall not sek the aid of any intermediary or broker. I shall try to Persuade others also to behave in this manner. I Shall be loyal to my rulers .Itake this solemn pledge, invoking (remembering) the Almighty God give me Strength to realize this holy resolve (of mine) and to fulfil the Summum bonum of my life.

Quoted at the end of the sccond Edition of "Slavery" published in 1911 by shri Ramayya Vyankayya Ayyawaru.

APPENDIX 'C'

Shadawal- Shah Dawal-Shaadwal Malik

A Muslim (Sufi) Saini. A 'Peer' by the name of Shah Dawal Malik. He was Venerated by the Hindus and Muslims for his sanctified and pious life. Ramdas observes; fdrhd nkoy eydk Hktrh* - (Many People Hindus Included) worship Dawal Malik!

The reference to the two '(Phallic Symbols of Lord Shiva) behind and in front of Shah Dawal intrigued me considerably. I made frantic enquris with Scholars like Dr. S.G Malshe, Dr. Y.D. Phadke, Prof. RB. Joshi, Shri M.S. Dikshit (of Maharastra Sahitya Parishadi Poona). They All Said that it must be a reference to a Muslim peer (Shadawal) in Poona. Prof. Joshi Promptly Said that it refered to ' Shah Dawal Malik' and Quoted the line from Ramdas.

I went to Poona recently to investigate the mystery. An elderly person directed me to the Darah in front of Shaniwar wada (in Kasba peth) . When Ivisited the Dargah I found it to be the Dargah of khwaja Makhdum Sayyad Shah Jonjani Chisti . A Hindu devotee took me to the Senior Office-bearer of the Dargah. When irequested him to direct me to the Shah Dawal Dargah, he asked me to, "procced for about two furlongs and you will come straight to the Shah Dawal Dargah,"

The Hindu devotee also mentioned that there was a Shiva Temple on a hillock behind the Dargah. It is called the 'Mahadeo Hillock.

I followed these directions and found the Dargah there. The name of the Saint was written in a circular board of the Dargah as follows:-

"Hajrat Shah Dawal Baba Rehemtullah Aleiha Dargah Sharif." The Senior Attendant there welcome me and told me that the Dargah was constructed between 1234-1238 A.D. HE also pointed Out the Mahadev Hill behind the dargah where a Shiva Temple is Locked. He also pointed out a Smaller Shiva Temple In Front of the Dargah on the banks of the Mutha river Just near the Bund Garden Bridge About two Fulongs from the Dargah.

Thus the Shah Dawal Dargah is situated in the Centre, and the two Mahadev Temples (containing the ' Pindi's-the phallic Symbols of Lord Shiva) are situated one at the back the other in front of the Dargah. Now the reference to the worship and ablutions on the two lingams-one behind the Dargah and the other in front in of the Dargah-was crystal clear.

The People in the ruralareas have a belief that if they drown the ' pindi ' (the Phallic Symbol of Shiva) in water at a time of acute drought. Lord Shiva is please and sends heavy rains to the droughthit region. The annual festivals is observed on the Shiva- Ekadashi day.

The Co-existence of the Dargah and the two Mahadev Temples must have been regarded as unique and hence must have been vencrated by Hindus and Muslims alike. The Fair Must have been very famous and well know in Mahatma Phule's time (The Book ' Slavery ' was Published in 1873).

●●●

प्रातः स्मरणीय भारतीय प्रथम शिक्षिका माँ सावित्री बाई फूले

188वीं जयन्ती (03.01.1831 - 10.03.1897)

भारत में कुछ शास्त्र कहते हैं "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता वहीं दूसरी ओर कुछ शास्त्रों में लिखा ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' दोनों बातें एक दूसरे की ध्रुवीय विपरीत हैं जैसे कि पृथ्वी का उत्तरी ध्रव एवं दक्षिणी ध्रुव ग्लोब में क्रमशः ऊपर और नीचे है। शास्त्र की बात छोड़कर तथ्य यही है कि भारत में 19वीं शताब्दी के समय स्त्री जगत त्रिस्तरीय दासता से पीड़ित थी (1) अंग्रेजों की दासता (2) ब्राम्हणी–सामाजिक दासता (3) घर में पुरुष की दासता ।

इन विषम परिस्थितियों में किसी स्त्री का प्रथम शिक्षिका बनना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य था। प्रथम शिक्षिका का लक्ष्य पाने में निश्चय ही सर्वप्रथम साधुवाद तो प्रातः स्मरणीय माँ सावित्री बाई फूले को देना होगा जिन्होंने शादी के बाद अन्य दायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वयं अपने पति महामना फूले से शिक्षा लेकर आगे बढ़ीं और तत्पश्चात् शिक्षा जगत में बहुजनों हेतु शिक्षा का शुभारम्भ करना बड़े साहस एवं त्याग का प्रतीक है।

आपका जन्म 3 जनवरी 1831 को सतारा जिला (महाराष्ट्र) के तायगांव में हुआ था, आपके पिता का नाम खण्डो जी नेवसे एवं माता का नाम लक्ष्मी बाई नेवसे (माली जाति का उपनाम) था। आपकी शादी 9 वर्ष की अवस्था में (1840) हुई थी एवं महामना फूले (उनके पति) तब 13 वर्ष के थे। उन दिनों भारत में बाल विवाह की प्रथा थी जो आज भी सुदूर गांवों या पिछड़े क्षेत्रों में दिखाई पड़ती है। सभी प्रथायें जैसे बाल विवाह प्रथा, सती प्रथा, छुआछूत प्रथा, नारी अशिक्षा प्रथा एक मानसिक विकलांगता का प्रतीक है ताकि बहुजन समाज का जीवन और भी पशुवत बना रहे। माँ सावित्री बाई फूले ने अदम्य साहस के साथ इन कुप्रथाओं पर अपने पति महामना फूले के साथ कदम से कदम मिलाकर जीवन भर कुठाराघात किया। उनके बारे में ठीक ही कहा गया है।

"राह में हमेशा रोड़ा अटकाया जाने लगा,
छेड़छाड़, गन्दगी का सामना सावित्री ने किया,
जितना विरोध उतना ही और वह आगे बढ़ी,
बढे दम्पत्ति दोनों कफन बांध माथे पर लिया।"

नारी शिक्षा, शूद्र शिक्षा के लिए वर्ष 1848 से लेकर जीवन पर्यन्त 10 मार्च 1897 तक वह सामाजिक कुरीतियों को मिटाने हेतु संघर्षरत रहीं तथा महामना फूले का आजीवन उत्साह वर्धन करती रहीं। वर्ष 1873 में सत्य शोधक समाज की स्थापना के बाद एवं महामना फूले के परिनिर्वाण (1890) के बाद इस आन्दोलन को गांव–गांव तक ले जाने में वह सफल रहीं। महामना फूले द्वारा लिखित पुस्तक सार्वजनिक सत्य धर्म को माँ सावित्री बाई फूले ने ही 1891 में गहन आर्थिक तंगी में छपवाया था। आज यह पुस्तक विश्व धर्म की प्रतीक है। अन्त में यही कहना है –

अन्त में यही कहना है –
जिनके साहस, शौर्य का कायल हूँ मैं
ज्यों जग को प्रभावित किया फूले दम्पत्ति ने
उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर आज मैं
संकल्प हूँ उनके शेष कार्य को निपटाने में।

अपेक्षा :– हम सब 85 प्रतिशत विशेषतः माली, सैनी, कुशवाहा, मौर्य, शाक्य एससी, एसटी समाज फूले दम्पत्ति के अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु तन, मन, धन से शिक्षा की समाज फूले दम्पत्ति के अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु तन, मन, धन से शिक्षा की अभिनव योजना में योगदान दें। इस योजना के अन्तर्गत आवासीय महामना फूले शिक्षण संस्थान की स्थापना होनी है जिसके लिए भामाशाहों की महती आवश्यकता है ताकि इस ऐतिहासिक कार्य को यथाशीघ्र पूरा किया जा सके।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

फुले दम्पत्ति
को
भारतरत्न दिया जाय
समस्त सत्यशोधक परिवार

सावित्री बाई फुले
की 188वीं जयंति
3 जनवरी 2019 पर
हार्दिक शुभकामनाऐं

देश भर के समाचार

● नांदेड़ (महा.)– 22.23 दिसम्बर प्रा. श्रावण देवरे ने राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन किया।

● किरनापुर (म.प्र.)– शहीद लिखिराम कावरे की 19 वीं पुण्यतीथि शहिद स्मारक पर क्षेत्र के हजारों नागरिकों ने पुष्पांजली अर्पीत की । पूर्व विधायक पुष्पलता कावरे, विधायक हीना कावरे ने आभार प्रकट किया ।

● सूरत (गुजरात)– 5.6 जनवरी को राजस्थान माली समाज सेवा संस्थान ट्रस्ट द्वारा 15वाँ वार्षिक उत्सव एवं शिक्षण जागृति सम्मेलन के अध्यक्षता गंगाराम गेहलोत अध्यक्ष गुजरात माली फेडरेशन करेंगे। उक्त जानकारी शन्तीलाल मुलाजी गेहलोत ने दी ।

● जयपुर (राज.)–जयपुर जिला माली समाज का 26वाँ विवाह सम्मेलन 8 मार्च को प्रथम परीचय सम्मेलन 30 दिसम्बर द्वित्तीय परिचय सम्मेलन 6 जनवरी तृतीय परिचय सम्मेलन 3 फरवरी को अध्यन ओम राजोरिया संयोजक भागचन्द सैनी ने उक्त जानकारी दी।

● तुलजापुर (महा.)– 16 दिसम्बर के अ.भा. माली महासंघ की आमसभा में शंकराव लिंगे अध्यक्ष चुने गये। पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी ने शिक्षा के लिए काम करने का संकल्प लिया।

● शेगांव (महा.)– 28 दिसम्बर को राजकीय एल्गार परिषद में समाज सम्मेलन का एड. राजेन्द्र महाडोले ने उद्घाटन किया विधायक बलिराम शिरसकर को अध्यक्षता थी।

● ठाणे(महा.)– 16 दिसम्बर को समाजसेवी डी. के. माली का सहस्त्र चन्द्र दर्शन समारोह में स्वामी प्रसाद मौर्य मंत्री, छगन भुजबल पूर्व उपमुख्यमंत्री, चौ. इन्द्रराज सिंह सैनी, सुमन कुमार सैनी अलका सैनी, डॉ.पी.एन. अम्बाड़कर, रामनारायण चौहान, सुकुमार पेटकुले, शत्रुधन प्रसाद पूर्व मंत्री नेपाल आदि ने शुभकामना दी । डॉ. प्रकाश ढ़ोकने, वनिता लोंडे ने संचालन किया।

● हिसार (हरि.) मास्टर महावीर सैनी सातरोड़ ने मेयर पद के लिए नामांकन किया।

● राजीम (छग.)– छत्तीसगढ़ प्रदेश मरार (कोस.) पटेल समाज का युवक–युवति परिचय सम्मेलन 13 जनवरी। सम्पर्क राजेन्द्र नायक अध्यक्ष ।

● जयपुर (राज.)– महात्मा जोतिबा फुले राष्ट्रीय संस्थान के प्रदेशाध्यक्ष मांगीलाल पंवार की अध्यक्षता में आयोंजित बैठक में 10 फरवरी को समाज का द्वित्तीय सामूहिक विवाह समारोह करने का निश्चय किया। मीडिया प्रभारी राजेन्द्र मावर ने उक्तजानकारी दी।

● तलेन (म.प्र.)– धर्मेन्द्र पुष्पद ने ग्वालियर में आयोजित प्रतिस्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता। बधाई

● मुम्बई (महा.)– विदर्भ माली संस्था द्वारा 6 जनवरी को दयानंद विद्यालय पाँचतस्ता मुलंद में वर–वधु मेलावा सम्पर्क नामदेवराव बगाडे 9967520070

● तुलजापुर (महा.)– 16 दिसम्बर के अ.भा. माली महासंघ का लोहिया मंगल कार्यालय में सम्मेलन ।

● बड़नगर (म.प्र.)– गुजराती रामी माली समाज के विनोद मकवाने बताया कि 28 नवम्बर को महात्मा फुले की पुण्य तिथि मनाई।

● अजमेर (राज.)– जिला माली (सैनी) समाज सामूहिक विवाह समिति द्वारा 14वाँ सामूहिक विवाह सम्मेलन 8 मार्च को आयोजित । सम्पर्क 9413304481, 9413664550, प्रदीप कुमार कच्छावा 9950427336,

● जोधपुर (राज.)– मथानिया के विरेन्द्र परिहार की बेटी भावना परिहार ने राष्ट्रीय विधि विश्व विद्यालय राची की एल. एल. बी. पढ़ाई में 9 गोल्ड मेडल जीते।

● पुणे (महा.)– फुले दाम्पत्य सम्मान दिवस रैली 1 जनवरी भिड़वाडा में आयोजित ।

● राजा का ताजपुर प्रमाण (उप्र.)– अंतराष्ट्रीय सैनी समाज की मिटिंग मदन सैनी पत्रकार डालचन्द सैनी, सुरेश सैनी, अनिलकुमार सैनी ने समाज को शिक्षित होकर एकजूट होने का आव्हान किया।

● दिल्ली – 2 दिसम्बर को पूर्वी दिल्ली सैनी सथा वार्षिक समारोह में श्रीपाल सैनी, जय भगवान सैनी, ज्व नरेन्द्र सैनी, चौ.इन्द्रराजसिंह सैनी , मोहिन्दर कुमार भारल, महावीर सैनी, कृष्ण सुमन सैनी, एड. सीमा सैनी, विजयारानी सैनी, सुमन सैनी, रामनारायण चौहान, अमित सैनी, हरीश सैनी, वेद प्रकाश सैनी, सेवाराम सैनी, राधेश्याम सैनी, खुशीराम सैनी, ई. पवन सैनी, महेन्द्र सैनी, ताराचन्द सैनी, ने विवाह योग्य युवा–युवति स्मारिका का विमोचन किया व शिक्षा का महत्व बताते हुए सामाजिक एकता का आव्हान किया।

महामंत्री शिवराज सैनी कोषाध्यक्ष राकेश कुमार सैनी रमेश कुमार सैनी, वेदप्रकाश सैनी, राजकुमार सैनी, गीता सैनी, दुलीचन्द सैनी, अजय सैनी आदि ने अतिथियों का स्वागत किया ।

अतिथियों ने प्रतिभावन विद्यालयों को पुरस्कृत किया, समाज सेवियों का सम्मान किया । विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम किया।

● उज्जैन (म.प्र.)– फूलमाली कल्याण समिति बापू नगर में तीसरा सामूहिक विवाह सम्मेलन 10 फरवरी सम्पर्कः– मली अर्जुन 99260593751 समिति अध्यक्ष सुरेश सोनगरा, उपाध्यक्ष सीताराम पपटवाल सचिव धनराज बवेरवाल, कोषाध्यक्ष अर्जुन बबेरवाल, पप्पू विरपर ने सफलता की कामना की ।

● सारंगपुर (म.प्र.)– समाज के प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह करने का निश्चय हुआ। अध्यक्षता ओम पुष्पद, रामचरण पुष्प, संतोष पुष्पद ने शिक्षा का महत्तव बताया।

● नयागांव (महा.)– कान्ति ज्योति सावित्री बाई फुले स्माराक नायगांव में सावित्री गाई फुले की 3 जनवरी के कार्यक्रम हेतु पूर्व सासंद समीर भुजबल ने तैयारी की।

● शेगांव (महा.)– 8 दिसम्बर को माली समाज का राज्य स्तरीय युवक–युवति परिचय सम्मेलन का आयोजन। प्रा. दिनेश तायड़े अध्यक्ष ने यह जानकार दी ।

● जोधपुर (राज.)–2017 यूपीएसी परीक्षा में गौरव सैनी का **IAS** में चयन एवं जोधपुर में पोस्टिंग हुई। बधाई ।

● जयपुर (राज.)– डॉ. पृथ्वीराज सांखला **IAS** को सचिव वित्त एवं राजस्व विभाग एवं डॉ. देवाराम सैनी को मुख्यमंत्री का विशेष कर्तव्य अधिकारी की नियुक्ति होने पर बधाई ।

● आसलवाड़ा कामठी (महा.)– अर्जुन भाऊ राऊत ने बताया कि सावित्रीबाई फुले की जयंति 3 जनवरी को निःशुल्क रोग निदान शिविर में डॉ. सोपान बघे, डॉ. शैलेन्द्र कुमार गजभिये उपचार करेंगे।

● रतनगढ़ (राज.)– अमेरिका में विश्व स्तरीय मेकेनिकल इन्जिनियरिंग प्रतियोगिता में दीपक सैनी छात्र आई आईटी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया । बधाई।

● सिन्दखेड़ राज (महा.)– 29 दिसम्बर को शंकरराव लिंगे राष्ट्रीय अध्यक्ष महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान एवं अ.भा.माली महासंघ रमेश हिरालकर किरण इंगोले की उपस्थिति में गुणवंत अधिकारी एवं नवरत्न उद्योगपतियों का साकार किया।

● पिपलामण्डी (म.प्र.)–गोपाल राठौड़ एवं सुखलाल माली के नेतृत्व में 3 जनवरी को सावित्रीबाई फुले जयंति का आयोजन ।

● भूड़ (बिजनौर उप्र.)–अनिल सैनी एवं चरणसिंह द्वारा 30 दिसम्बर को मिटिंग ।

● जयपुर (राज.)– श्री माली शिक्षण संस्थान अशोक चौक आदर्श नगर जयपुर 302004 एड. अनुभव चन्देल ने बताया कि इस संस्थान द्वारा छात्रावास का संचालन किया जा रहा है जिसमें 250 विद्यार्थियों को सभी सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। छात्रों से चर्चा करने पर उन्होंने बताया कि हम राजस्थान एवं हरियाणा से यहां आकर समाज के छात्रावास की व्यवस्था से बहुत खुश है वार्डन एवं मेनेजमेन्ट कमेटी का अनुशासन का पालन करते है हम अपना भविष्य बनाने हेतु यहां आकर बहुत ही उत्साहित है। छात्र भी खुश है।

● चुरू (राज.)– 6 जनवरी को सैनी समाज कर्मचारी अधिकारी सेवा संस्थान द्वारा प्रतिभावन विद्यार्थि एवं नव नियुक्त अधिकारी कर्मचारियों का सम्मान समारोह चरणमल सैने नारायण प्रसाद गौड़ विनोद पापटवाल ने उक्त जानकारी दी।

● दिल्ली– 30 दिसम्बर को सैनी समाज रामपुरा–त्रिनगर द्वारा महाराज शूरसैनी जयंति पर शोभा यात्रा का आयोजन एवं मेधावी छात्रों को प्रमाण पत्र ।

● इन्दौर (म.प्र.)–10 फरवरी को कनकेश्वरी मैदान हीरा नगर में युवक–युवतियों परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह समारोह जिससे विधवा–विधुर, विकलांग प्रत्याशी भी भाग लेगें। परीचय स्मरिका प्रकाशित की जाएगी। संयोजक सत्यनारायण चौहान, एवं भगवती माली जगदीश, विष्णु वरतुने, मांगीलाल चौहान, डॉ. प्रेमचन्द पुष्पाकर सम्पर्क ने 9302130071, 9111867410 ।

● चालिसगांव (महा.)– 28 दिसम्बर को पातोंडामें चेतना महाजन का कविता के साथ सत्यशोधक विवाह सम्पन्न हुआ। सभी मेहमानों ने नव दम्पति को आर्शीवाद दिया एवं महात्मा फुले की प्रतिमा भेंट की ।

● अरण (महा.)– 25 दिसम्बर को संत शिरोमणी सावता महाजन तीर्थ क्षेत्र में शंकरराव लिंगे अध्यक्ष महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान ने आयोजित मिटिंग में फुले दम्पत्तिके आदर्शो पर चलने का आव्हान किया।

● सुंधा पर्वत (राज.)– माली समाज विकास संस्थान द्वारा 17 वीघा भूमि पर गार्डन धर्मशाला का निमार्ण कार्य प्रारम्भ उक्त जानकारी राजेश ने दी।

● अकोला – (महा.)– 25 दिसम्बर को खड़की में शंकरराव लिंगे अध्यक्ष की उपस्थिति में वर–वधु परिचय सम्मेलन अयोजित ।

● गाजियाबाद– (उप्र.)– 25 दिसम्बर को महाराजा शूर सैनी जंयति के उपलक्ष में सैनी सम्मेलन, आलॅ इंडिया सैनी सभा द्वारा आयोजित किया सभा के प्रवक्ता अवनीश सैनी ने बताया कि इस अवसर पर ओपी. सैनी **(RIAS)** एवं अतिथियों ने प्रतिभावनों को सम्मानित किया एवं समाज को शिक्षित होने का आव्हान किया।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

लेक सावित्री मायची

नायगावात सावित्री
नामे लेक जन्मा आली
नायगावची सावित्री
दुनियेची माय झाली ।।धृ।।

केशवसूत जन्मकाली
'काव्यफुले' जन्मा आली
केशवसूत पूर्व काली
माय कवियित्री झाली ।।१।।

पैली लेखिका शिक्षिका
सेवाभावी माय झाली
ज्ञानज्योत जोतिबाची
ज्ञान सर्वेश्वरी झाली ।।२।।

आम्हासाठी क्रांतीज्योती
ज्ञानेश्वरी गीता झाली
जन्मदिनी सावित्रीच्या
कथा सांगण्या मी आली।।३।।

काव्य लेखन वारसा
पुढे घेऊन निघाली
लेक सावित्री मायची
धन्य मीही अशी झाली ।।४।।

सौ.मंगला मधुकर रोकडे.
'शब्दसृष्टी', मास्तखाडी,
नेहरु नगर, देवपूर, धुळे.

● राजनीतिक हमेशा सामूहिक होनी चाहिए

● व्यक्ति आधारित (**Personality based Organizations**) या मसिहायी (करिस्म्यायीक) आंदोलन उन व्यक्ति के साथ ही खत्म हो जाते हैं

● शिक्षित बनों, संघर्ष करो, और संघटित रहो।

● ब्राह्मणवाद यह एक विचार है, गैर बराबरी की भावना (जातीवाद) समाज के मन में कायम स्थिर करते रहना यही ब्राह्मणवाद है।

बाबासाहेब भीम राव अम्बेडकर